

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र वसावायु भुवन श्री महाराष्ट्र
II-121

मलकासुतआनृदि॥

१ॐ नमः शिवाय ॥ का त हे प्र वा य ॥ ॥ श्री ते न व स ह आ क र्ता ति स्था
॥ ॐ उं जीं गीं को हुं हूं ओं धाय हुं हूं हो ओं पीं जीं उं ॐ नमः श्री
मुं शुं सों ॥ कीं ओं इं वूं क्रूं लूं लीं छो लूं कुं कुं डां ॐ शुं मुं गीं
महा उपचक्षु ना कि च्छ न्य च क्षु तेन वाय य वं पत्र य रु उं य म
कुम हा वि घ्न सर्व भस्म रां ऊं नं क्रू रू रखा हा नं रू रू सुं श्रीं नर म
हा तेन वाय न भा एगवर्ण च क्षु य भ भ न वा सि न उं स्व दा

कयालहलमहापुगसमात्रहमहाविमानमालाकूलमहालवङ्ग
गद्यपत्रिवृगमहामुखवङ्गपुञ्जघञ्जमन्त्रकिङ्किनीमूढादहास
किलि २ ह्रं दंष्ट्राघात्राश्वकात्रकनादमद्यवङ्गलगङ्गचर्मपावृगभरी
नत्रधिनमांसतिङ्कमहानाकसत्रोदयंष्ट्राकत्रालहीमाददहासल
त्रिगविशूत्समपुल्ललचकात्रमञ्जुहिति २ ललतिङ्कजार्हकृष्ण
मुखङ्ककात्रहयशासनकयालवष्टिगङ्गहामूकठमञ्जु २ मखनः

महाकाव्यसहितम् ॥

मृदुहृत्सकिस्तिरुद्धं रदं द्याद्यात्रा न्वकान्धसर्वविघ्नविनाशनं
दं कर्मसाधय २ भीर्षुलन २ कृत्र २ जूक २ गनसमय २ मरुपुवजय
२ नग २ कल्यय २ चल २ चालय २ नृधित्रमद्यर्मासपिराहन २ कृत्र
२ द्विधि २ मात्रय २ अनूकम २ वड २ गत्रीनमानय २ जेसाव्यभक्तमपि
इष्टं वागृहीतं वा आवभय २ कामय २ नृय २ वल २ कीटना २ उ
२ कंभाउलूकवदनकन २ कभकन २ मालावनधकृषू २ उ २ गवष्टि

२

गभत्रीनसर्वगृहावभानयुलम्भाष्टरग्ननाभिकंविपितमुखकपिल
ऊठावुक्तं २ कल २ काला मुख खखलतपागय २ नकाकृषूधय
य २ तमिंपागय २ भिवंगृक २ हदयं २ उ २ हकषादोगृक २ नूडा
लुठय २ इ २ इ २ विद्यानय २ तिमलनतंदय २ वड २ हहन २ दरु
नगाउय २ व २ कं २ ह २ दय २ गकिनातंदय २ रदुयाकीलय २ कृक
यापागय २ अनू २ गनगृक २ मिनात्रागभि २ कन २ काहि २ हि २ कया

महाकायेसहिजाकरी॥

हिक चातुर्थिके जाकि नीलकण्ठगुहान्मंवापय २ उक्तापरा २ रुनि
पागय २ गृह २ अस्तिगाइ तेनव ७ अकि न्न तेनव ७ अकि च छु तेनव
७ अकि ओध तेनव ७ अकि छि मरु तेनव ७ अकि कपात्र तेनव ७
अकि लीषय तेनव ७ अकि संहार तेनव ७ अकि कपाल एत ७ अ
कि महाकायालिक ७ अकि प्रवगीगुह ७ अकि कनवगी ७ अकि
किमवनीकात्रय ७ अकि केलाभारत ७ अकि पत्रमकात्रुचिचि २

३

कितिर विधे अधानधाननय चधुनय नुड काधदिनि युक्त अस्
नकराकन आकागमतिनूपात्मनवन्धन ७ अकि न्द २ मधुसंपुव
मय २ गृह २ मूरवंवन्ध २ हदर्यमूर २ अकि दीवन्ध २ इष्टगु
हान्नवन्ध २ दिग्गवन्ध २ विदिग्गवन्ध २ उच्चवन्ध २ अधकावन्ध २ स
र्ववन्ध २ तस्मान्पाणीयनमृदिकयावामर्षये वी आभय २ पाग
य २ पुचधुमहातेनवारकितिर विधे भवनाय ह्म २ अकि ॥

महाकाव्यसूक्त्या कौ

[illegible]